उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग
मुख्य परीक्षा-2020
(सामान्य हिन्दी)
मॉडल पेपर-1

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 150**

नोट:

- ***(i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।***
- ***(ii) प्रत्येक प्रश्न के अंक प्रश्न के अंत में अंकित हैं।***
- ***(iii) पत्र, प्रार्थना-पत्र या किसी अन्य प्रश्न के उत्तर के साथ अपना अथवा अन्य का नाम, पता एवं अनुक्रमांक न लिखें। आवश्यक होने पर क, ख, ग लिख सकते हैं।***

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिये:

ज़िंदगी के असली मज़े उनके लिये नहीं हैं जो फूलों की छाँह के नीचे खेलते और सोते हैं, बल्कि फूलों की छाँह के नीचे अगर जीवन का कोई स्वाद छिपा है तो वह भी उन्हीं के लिये है जो दूर रेगिस्तान से आ रहे हैं, जिनका कंठ सूखा हुआ, होंठ फटे हुए और सारा बदन पसीने से तर है। पानी में जो अमृत वाला तत्त्व है, उसे वह जानता है जो धूप में खूब सूख चुका है, वह नहीं जो रेगिस्तान में कभी पड़ा ही नहीं है। सुख देने वाली चीज़ें पहले भी थीं और अब भी हैं। फर्क यह है कि जो सुखों का मूल्य पहले चुकाते हैं और उनके मज़े बाद में लेते हैं उन्हें स्वाद अधिक मिलता है। जिन्हें आराम आसानी से मिल जाता है, उनके लिये आराम ही मौत है। जो लोग पाँव भीगने के खौफ से पानी से बचते रहते हैं, समुद्र में डूब जाने का खतरा उन्हीं के लिये है। लहरों में तैरने का जिन्हें अभ्यास है वे मोती लेकर बाहर आएँगे। चाँदनी की ताज़गी और शीतलता का आनंद वह मनुष्य लेता है जो दिन भर धूप में थककर लौटा है, जिसके शरीर को अब तरलाई की ज़रूरत महसूस होती है और जिसका मन यह जानकर संतुष्ट है कि दिन भर का समय उसने किसी अच्छे काम में लगाया है। इसके विपरीत वह आदमी भी है जो दिन भर खिड़कियाँ बंद करके पंखे के नीचे छिपा हुआ था और अब रात में जिसकी सेज बाहर चाँदनी में लगाई गई है। भ्रम तो शायद उसे भी होता होगा कि वह चाँदनी के मज़े ले रहा है, लेकिन सच पूछिये तो वह खुशबूदार फूलों के रस में दिन-रात सड़ रहा है। भोजन का असली स्वाद उसी को मिलता है जो कुछ दिन बिना खाए भी रह सकता है। 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा', जीवन का भोग त्याग के साथ करो, यह केवल परमार्थ का ही उपदेश नहीं है, क्योंकि संयम से भोग करने पर जीवन से जो आनंद प्राप्त होता है, वह निराभोगी बनकर भोगने से नहीं मिल पाता। बड़ी चीज़ें बड़े संकटों में विकास पाती हैं, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्ज़ा करती हैं। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने बाप के दुश्मन को परास्त कर दिया था, जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय, जब उसके बाप के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी। महाभारत में देश के प्राय: अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे। मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था। विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि "ज़िंदगी की सबसे बड़ी सिफत हिम्मत है। आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं।"

(क) प्रस्तुत गद्यांश का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिये। 5

(ख) निराभोगी बनने से जीवन का आनंद क्यों नहीं मिल पाता है? गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिये। 5

(ग) उपर्युक्त गद्यांश की रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या कीजिये। 20

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर निर्देशानुसार उत्तर लिखिये:

विद्वानों का यह कथन बहुत ठीक है कि विनम्रता के बिना स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं। इस बात को सब लोग मानते हैं कि आत्मसंस्कार के लिये थोड़ी-बहुत मानसिक स्वतंत्रता परमावश्यक है- चाहे उस स्वतंत्रता में अभिमान और नम्रता दोनों का मेल हो और चाहे वह नम्रता ही से उत्पन्न हो। यह बात तो निश्चित है कि जो मनुष्य मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहता है उसके लिये वह गुण अनिवार्य है, जिससे आत्मनिर्भरता आती है और जिससे अपने पैरों के बल खड़ा होना आता है। युवा को यह सदा स्मरण रखना चाहिये कि वह बहुत कम बातें जानता है, अपने ही आदर्श से वह बहुत नीचे है और उसकी आकांक्षाएँ उसकी योग्यता से कहीं बढ़ी हुई हैं। उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि वह अपने बड़ों का सम्मान करे, छोटों और बराबर वालों से कोमलता का व्यवहार करे, ये बातें आत्ममर्यादा के लिये भी आवश्यक हैं। यह सारा संसार, जो कुछ हम हैं और जो कुछ हमारा है- हमारा शरीर, हमारी आत्मा, हमारे भोग, हमारे घर और बाहर की दशा, हमारे बहुत से अवगुण और थोड़े गुण, सब इसी बात की आवश्यकता प्रकट करते हैं कि हमें अपनी आत्मा को नम्र रखना चाहिये। नम्रता से मेरा अभिप्राय दब्बूपन से नहीं है जिसके कारण मनुष्य दूसरों का मुँह ताकता है, जिससे उसका संकल्प क्षीण और

उसकी प्रज्ञा मंद हो जाती है; जिसके कारण आगे बढ़ने के समय भी वह पीछे रहता है और अवसर पड़ने पर चट-पट किसी बात का निर्णय नहीं कर सकता। मनुष्य का बेड़ा उसके अपने ही हाथ में है, उसे वह चाहे जिधर ले जाए। सच्ची आत्मा वही है जो प्रत्येक दशा में प्रत्येक स्थिति के बीच अपनी राह आप निकालती है।

(क) प्रस्तुत गद्यांश के लिये उपर्युक्त शीर्षक दीजिये। 5

(ख) मर्यादापूर्वक जीवन जीने के लिये किन गुणों की आवश्यकता है? उक्त गद्यांश में युवाओं को किस सच्चाई से परिचित कराया गया है? 5

(ग) उपर्युक्त गद्यांश का संक्षेपण लिखिये। 20

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिये:

(क) आपके नगर में अनधिकृत मकान बनाए जा रहे हैं। इनकी रोकथाम के लिये ज़िलाधिकारी को पत्र लिखिये। 10

(ख) शासकीय तथा अर्द्धशासकीय पत्र में अंतर स्पष्ट करें, साथ ही शासकीय पत्र का नमूना प्रस्तुत करें। 10

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिये: 10

उन्मुख, कुकृति, निंदा, विवादास्पद, संदूषित, धवल, खरा, पापचेता, लब्ध, अधम

5. (क) निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्गों का निर्देश कीजिये: 5

अपराजिता, उत्फुल्ल, संकर्षण, पुनरावृत्ति, निर्यास

(ख) निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्ययों को विलग कीजिये। 5

पैराक, चटनी, रुपहला, गवइया, छावनी

6. निम्नलिखित वाक्यों या पदबंधों के लिये एक-एक शब्द लिखिये: 10

(i) काँटों से भरा हुआ पथ।

(ii) किसी प्राणी को न मारना।

(iii) पहले से चली आ रही परंपरा का अनुपालन करने वाला।

(iv) जिसमें कोई विकार न हो।

(v) ऋषि के द्वारा प्रयोग किया हुआ।

7. (क) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिये: 5

(i) मेरा और आपका घोर संबंध है।

(ii) भगवान राम ने संकल्प लिया।

(iii) बाज़ार में भारी-भरकम भीड़ जमा थी।

(iv) श्रीमती राव जिस स्तर की नृत्यांगना है उनके पति उस स्तर के नृत्यांगन नहीं हैं।

(v) उन्होंने इस बात पर आपत्ति प्रकट की है।

(ख) निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी का संशोधन कीजिये: 5

आधिक्यता, भिच्छु, परलौकिक, मंत्रीमंडल, एकलौता

8. निम्नलिखित मुहावरों/लोकोक्तियों के अर्थ लिखिये और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिये: 30

(i) तीन कनौजिया, तेरह चूल्हा।

(ii) झाड़ू से बात करना।

(iii) डंडा बजाते फिरना।

(iv) पुचकारा कुत्ता सिर चढ़े।

(v) आगे नाथ न पीछे पगहा।

(vi) पत्थर में दूब जमना।

(vii) माथे पर बल पड़ना।

(viii) सीधी उँगली से घी नहीं निकलता।

(ix) यमराज का द्वार देख आना।

(x) अपनी डफली, अपना राग।

Drishti IAS